


---

# Kaveryashtakam Sahyakanyakashtakam

——  
कावेर्याष्टकम् अथवा सहायकन्यकाष्टकम्

——  

## Document Information



---

Text title : kAveryaShTakam 3 sahyakanyakAShTakam

File name : kAveryaShTakam3.itx

Category : aShTaka, devii, nadI, devI

Location : doc\_devii

Author : Krishnapremi Anna

Transliterated by : Musiri Janakiraman

Proofread by : Musiri Janakiraman

Description-comments : Kaveri Stuti Series No. 532 Thanjavur Sarasvati Mahal Series

Latest update : July 13, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 13, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



कावेर्याष्टकम् अथवा सल्यकन्यकाष्टकम्



सरोज-सम्भवाभ्युत्-त्रिनेत्र-भावनाभर्यी  
कवेर-राज-कन्यकां य कामितार्थ-दायिनीम् ।  
अगस्त्य-कुण्डिकान्तर-प्रविष्ट-वारिद्रुपिणीं  
भजामि सल्यकन्यकां भजामि सल्यकन्यकाम् ॥ १ ॥

पवित्र-धात्रि-वृक्षरूप-विष्णुपाद-सङ्गमां  
पतत्रिरूप-धारि-विघ्नराज-युञ्जु-युम्बिताम् ।  
भवाष्ये-तारकानिसूनु-पादुका-पवित्रितां  
भजामि सल्यकन्यकां भजामि सल्यकन्यकाम् ॥ २ ॥

अनेक-कोटि-पुण्य-तीर्थ-सङ्गमेन पूरितां  
अनोकल-प्रकीर्ण-पुष्प-पल्लवैः परिष्कृताम् ।  
निनाद-पूर्णा-चारु-वीथि-कीर्ण-रत्न-मौक्तिकां  
भजामि सल्यकन्यकां भजामि सल्यकन्यकाम् ॥ ३ ॥

तटद्वयेपि शम्भु-विष्णु-मन्दिरै-र्विराजितां  
तटिल्लता-समान-द्वेषसुन्दरीभि-राश्रिताम् ।  
वटादि-वृक्ष-मूलवासि-मौनि-वृन्द-भावितां  
भजामि सल्यकन्यकां भजामि सल्यकन्यकाम् ॥ ४ ॥

तरङ्ग-चारु-मोक्षलां विलोल-मीन-लोथनां  
प्रवाण-मौक्तिकोज्ज्वलां प्रकुल्ल-पुष्प-मालिकाम् ।  
कुंथायिताञ्ज-कुण्डलां य कुकुमादि-पाटलां  
भजामि सल्यकन्यकां भजामि सल्यकन्यकाम् ॥ ५ ॥

भुजङ्ग-शायि-रङ्गनाथ-पाद-सेवनाशया  
भुज-द्वयं प्रसार्य निःसृतामिव स्थितां मुदा ।  
गजेंद्र-केलि-वर्धिनीं द्विजेंद्र-लर्ष-दायिनीं  
भजामि सल्यकन्यकां भजामि सल्यकन्यकाम् ॥ ६ ॥

किरीटि-राम-शन्तनु-प्रभृत्यनेक-पार्थिवैः  
प्रपूजितां च धर्मवर्म-राज-दात्म्य-कीर्तिताम् ।  
धरातलैक-भूषणां सुरादि-सर्व-श्रवणां  
भजामि सख्यकन्यकां भजामि सख्यकन्यकाम् ॥ ७ ॥

प्रनष्ट-पञ्च-पातकां प्रकृष्ट-पुण्य-दायिकां  
सदर्ष-दिव्य-डेणिकां समुद्र-राज-नायिकाम् ।  
सहस्र-पत्र-मालिकां सरोज-पत्र-दोणिकां  
भजामि सख्यकन्यकां भजामि सख्यकन्यकाम् ॥ ८ ॥

सख्यकन्याष्टकमिदं पुण्यं प्रेमिकेन प्रकीर्तितम् ।  
श्रद्धया कीर्तयन्नित्यं सर्वमद्गणमाप्नुयात् ॥ ९ ॥  
एति कावेर्याष्टकं अथवा सख्यकन्यकाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded by Musiri Janakiraman

Proofread by Musiri Janakiraman, Rajani Arjun Shankar

---

—  
*Kaveryashtakam Sahyakanyakashatakam*  
pdf was typeset on July 13, 2024  
—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

